RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 16 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 21 सितम्बर 2026
एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

गर्ब्याल दम्पत्ति से बातचीज

छोटी विलायत के नाम से प्रसिद्ध रहा 'गर्ब्यांग'

- शिक्षा विभाग के बाद नगर पंचायत धारचूला की चैयरमैन बनीं साबित्री ह्यांकी गर्ब्याल
- दुर्गासिंह मर्तोलिया जब डीएसबी कैम्पस में अध्यक्ष बने, पहाड़ की लहर थी
- पधान मनोरथ सिंह ने गुंजी में स्कूल बचाने के लिये अपने बच्चों का प्रवेश करवाया

कार्यालय प्रतिनिधि

बात जब हिमालय की करें तो वहाँ के मजबूत स्तम्भ हमेशा स्मृति में रहते हैं। आज की विशेष वार्ता श्रीमान जमन सिंह गर्ब्याल-श्रीमती साबित्री गर्ब्याल के साथ है। इस दम्पत्ति ने सीमान्त के जिस वैभव को देखा है उतना ही दुरुह जिया भी है। इसी लिये यह यर्थाथ पर जीने वाले हैं और वर्तमान की दिखलावटी दुनिया को खोखला मानते हैं। श्रीमती साबित्री 33 साल शिक्षा विभाग में रहने के बाद धारचूला नगर पंचायत की चैयरमैन रही हैं। जमन सिंह जी एफसीआई से सेवानिवृत्त हैं।

पांगू के पधान भीम सिंह ह्यांकी और श्रीमती डमस्यां (दमयन्ती) देवी के घर जन्मी साबित्री ने सीमान्त पांगू में हाईस्कूल तक शिक्षा के बाद नैनीताल में चन्द्रभवन छात्रावास में रहकर इण्टर फिर एसआर छात्रावास में रहकर बीए की शिक्ष ग्रहण की। इलाहाबाद

शेष पृष्ठ 2 पर

इतिहास, पुस्तकों का अंदाज, इतिहास को जीना

प्रभात उप्रेती

इंसान होना एक खासा अनुभव है उसके दिमाग की हरकत, उस दिमाग का पूर्वाग्रही या संस्कारों से भर जाना या फिर अनकंडीशंड के हालात में सकून पाना और मर जाना। अगले जन्म में गर में जानवर या वनस्पति बना, और अभिव्यक्ति का हूनर कायम रहा तो खूब किस्से आदमी के दिमाग के रस ले ले के सुनाऊंगा। बुढ़ापे में आदमी, एलजाइमर का शिकार, असहाय हो जाता है, इन्द्रियां बदहाल! कहाँ पांव गिर रहे, कहाँ आवाज आ रही है क्या कहा जा रहा है और वह क्या सुन रहे हैं, के हालात हो जाते हैं, पर ऐसे में भी मैंने कुछ विद्वान कर्मठ बूढ़ों के रूतुबे का हूनर हरा-भरा देखा।

हालांकि आँखें कमजोर मिच-मिच कर रही हैं हाथ कांप रहे हैं पर अभी भी उनकी खोज, अभिव्यक्ति में युवाओं के प्रवाह हारमोंस का वहीं रस है। गर उनकी किताब पढ़ेंगे तो एक प्रवाह, दुलार, लहर की ताजगी महसूस करेंगे।

इण्टर के बाद ही उनको शोध और श्रम की दीवानगी लग गयी। पं. उमाकंत शास्त्री की मलैनाथ में सुनाई गयी श्रीमद्भागवत को सुन उन्हें संस्कृत शोध का और विश्लेषणात्मक खोज का चस्का लगा। इतिहास मैंने कम पढ़ा है, अल्पज्ञ हूँ। उसकी समय, उल्लेख तारीखों को याद किये रहना मेरे बस का नहीं। पर उत्तराखण्ड में इतिहास पर लिखने वाले तीन योद्धा जुझारू ऐसे हैं जिनका लिखना खोज का जज्बा चेतना होने तक जागरूक है। यथा डा ताराचन्द्र त्रिपाठी, डा. रामसिंह और डा. प्रयाग जोशी। क्या इनकी खोज काम!

अभी हालिया डा. प्रयाग जोशी की दो किताबें आयी हैं। 'उत्तराखण्ड का इतिहास द्युतिवर्मन से यशोवर्धन तक' और 'सीरा के मल्ल राजवंश का इतिहास' जिसमें पुरू पन्त से योद्धा सेरा के मल्लराजा और कीर्तिमान अकबर काल के समय के कुमाऊँ के महान योद्धा ज्ञानी रूद्रचन्द का इतिहास, अपने

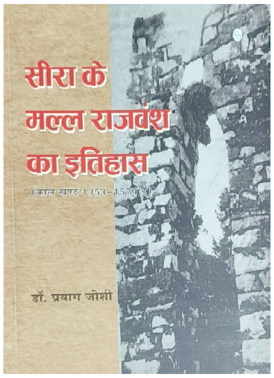

अंदाज में क्या लावण्य, सीख लिए है! उन्होंने कुमाउंनी राज्य भी अल्मोड़े में स्थाापित किया तो साथ में संस्कृत साहित्य भी लिखा। योद्धा, पुरूपंत की यशोगाथा भी है जिसने मल्ल राज्य को समाप्त कर रूद्रचन्द का साम्राज्य विस्तार किया। सब पढ़ कर यही लगता है आदमी की हरकत, दिमाग की संरचना हर युग में ऐसी ही है। वह भला भी है क्रूर भी है और संघर्ष के खेल में सर्वविजेता और हारा भी है। आज की राजनीति, विगत की राजनीति में कहीं कोई फर्क नहीं। वही धन दौलत, विस्तारवाद की इच्छा, कब्जाने की कीमत। आगे, यश कीर्ति के लिए बाहुबली, युद्धबली, संगठनात्मक नैतिकता वाला आदमी होना चाहिए जो मानसिक शाररिक अंदाज में खास हो। बांकी जिनमें यह सब नहीं हैं वह दलित याचिकाकर्ता और घुटना टेक जी हजूरी वाले हो इन दिग्गजों के अनुगामी हो जाते हैं। 'वीर भोग्या वंसुधारा' का सोच अभी भी सजग है। अब यह वीर बाहों से, बुद्धि से, चिन्तन से हो सकता है। अपने को स्थापित करने के लिए दिमाग स्टैविलिश्शमेंट आप में होना ही चाहिए। यही दिमागी विवेक सत्ता, शिक्षा, संस्कृति, विवेक को चलाता है। भूगोल इन खास डीएनए वाले इन्सान को मैटर भी देता है और जीवन भर के लिए एक ठस्स स्टेटजी भी देता है जिसके सहारे वह जिन्दगी भर अपनी जिन्दगी-सजयोता है या चलायमान करता है।

प्रयाग जोशी के हर लेखन में लोच है, प्रवाह है, और एक युवा सी सजगता है और गजब की श्रमशीलता है। 'लगे रहने' का उनमें जजबा पिच्चास साल की उम्र में बदस्तूर कायम है। हर उत्तराखण्डियों को उत्तराखयड को समझने के लिए उसे पढ़ना चाहिए। वह कहते हैं कि आज कुमाऊँ में परम्पराएं संस्कृति सब लुप्त होती जा रही हैं पर गढ़वाल में 'धात' जैसी पत्रिकाएं अपनी गढ़वाली बोली के विकास के लिए अनवतर कार्य कर रहीं हैं। कुल देवी जियारानी हो या वन राजियों पर काम या फिर जौनसार वावर बंगाण पर उनका काम, आप पढ़ो तो उत्तराखण्ड के दिल की धड़कन का अंदाज आएगा।

उनके लेखन में भूगोल है इतिहास है, समाजशास्त्र उसका मनोविज्ञान है जिसे कविता के माफिक लिखा है।

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

भ्रष्टाचार और अत्याचार दोनों ही नहीं होने चाहिये

उत्तराखण्ड आये दिन भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए हंगामे होने लगे हैं। साथ ही अत्याचार की घटनाएं कम नहीं हो रही हैं। शान्तप्रिय पर्वत प्रदेश में यह सब क्या होने लगा है? दरअसल सबकुछ समेटने की होड़, समाज में हाबी होने की आदत, अपने बर्चस्व की लड़ाई, चापलूसी कर आगे बढ़ने वालों के कारण समाज में यह सब होने लगा है। गलत करने के बाद भी अपने को सही ठहराने की जिद समाज तोड़ने वाली है। बात और व्यवहार में छिछोरापन करने वाले यह भूल रहे हैं कि उनकी हरकतों का कितना गलत प्रभाव हो रहा है।

लोहाघाट विधायक खुशाल सिंह अधिकारी ने अधिकारियों को भ्रष्ट बताते हुए जिस प्रकार का हंगामा किया वह बेहद चर्चा में है। विधायक ने कहा- चिल्लाना मेरा अधिकार है। बहस के बीच एपीडी अधिकारी ने भी आरोप लगाया कि दुग्ध विभाग आंचल की डेयरी में आपने किसी को रखने के लिये कहा, मैंने आपका कहा नहीं माना। विधायक और अधिकारी की बातें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। नेता जी और अधिकारी में कौन कितना सच है यह तो जाँच में पता चलता लेकिन पूरा प्रकरण भाजपा कांग्रेस बन गया, इसके बाद समझौता सा हो गया।

किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ की एसडीएम एवं पुलिस से नोकझोंक की वीडियो चर्चा में है। तराई में तो आये दिन इस प्रकार के हंगामे होने लगे हैं। रुद्रपुर में पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल, विधायक शिव अरोरा, किच्छा के पूर्व विधायक राजेश शुक्ला, सितारगंज के पूर्व विधायक नारायण पाल, हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश, धारचूला विधायक हरीश धामी सभी तो हंगामेदार बोल के लिये चर्चित हो चुके हैं। इसके अलावा खानपुर के कुंवर प्रणव चैम्पियन, उमेश कुमार का बोल-बड़बोल बहुत ज्यादा सुनाई देते रहे हैं। आंखिर यह सब क्या होने लगा है? क्या अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं या अपने आकाओं को खुश करने के लिये मनमर्जी करने लगे हैं? क्या ईमानदार अधिकारियों कर्मचारियों पर अत्याचार होने लगा है? भ्रष्टाचार और अत्याचार दोनों ही नहीं होने चाहिये।

बाजपुर में भाजपा नेता ने लोक निर्माण विभाग पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए मारपीट कर डाली। उपजिलाधिकारी सहित कई लोगों की उपस्थिति यह हंगामा होता रहा। खुलेआम दादागिरी और दबंगई का प्रचलन युवाओं को गलत राह पर ले जाने वाला है। बाद में इस मामले को समझौता कर शान्त किया गया। रा.स्ना.महाविद्यालय काशीपुर में छात्र नेता का वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वह प्राचार्य से बहस कर रहा है। हल्द्वानी के एमबीपीजी कालेज में तो आये दिन प्राचार्य कक्ष के सम्मुख हंगामा होता रहता है। यह सारी घटनाओं से यह पता चलता है कि भ्रष्टाचार और अत्याचार दोनों ही हो रहे हैं। यह देखने वाली बात है कि कौन भ्रष्टाचारी है और कौन अत्याचारी। भ्रष्टाचार और अत्याचार के खिलाफ लड़ाई जरूरी है परन्तु इसकी आड़ में किसी निर्दोष को न फंसाया जाए, किसी सज्जन पर आरोप न लगें, ईमानदार कर्मचारी पर अत्याचार न हो। इसके अलावा सोशल मीडिया पर अपनी वाहवाही के लिये गलत का साथ न दिया जाए अन्यथा इसके परिणाम भुगतने होंगे।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

जम्मू-कश्मीर, लद्दाख को आधिकारिक नक्शे के अनुसार दिखाया जाना चाहिए

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र महासभा में नए वैश्विक मानचित्र के समर्थन में मतदान करने के बाद भारत ने आगाह किया है कि प्रस्तावित मैप में जम्मू-कश्मीर ओर लद्दाख को भारत के आधिकारिक नक्शे के अनुसार दिखाया जाना चाहिए।

पाक सेना के वीडियो में हमले का दावा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सेना ने यह अकसे बना वीडियो शेयर किया, जिसमें मई 2025 में भारत के साथ हुए संघर्ष के दौरान भारतीय संसद पर हमला होने का दावा किया गया। पाकिस्तान ने मई 2025 में भारत के साथ हुए संघर्ष को लेकर जारी किये नए वीडियो में दावा किया कि भारत के 32 एयरफोर्स बेस पर हमला कर 8 भारतीय विमान गिराए और 2एस400 एयर डिफेंस सिस्टम नष्ट किए।

सऊदी अरब कम्पनी करेगी निवेश

नई दिल्ली। सऊदी अरब की प्रमुख ऊर्जा और अवसंरचना कम्पनी अल्फनार ग्रुप भारत स्थित अपनी पवन टरबाइन विनिर्माण कम्पनी सेनवियन में दस करोड डॉलर (लगभग 830 करोड़ रुपये) का निवेश करने जा रही है। इसका उद्देश्य कम्पनी के उत्पाद विकास को मजबूत करना, नई तकनीक पर काम करना है।

फसक

दाज्यू, कलजुग में चुरैन भी खुशबू होने वाली ठैरी

चाहे कितना ही जतन कर लो, होनी कोई नहीं टाल सकता है बल

दाज्यू, हमारे मोहल्ले में डड़ाडाड़ मची है कि सफाई नहीं होती। किसको समझाया जाए कि घर के गुबरौल सड़क पर मत डालो। सब रिटायर्ड साहब लोगों ने पत्थर वाले मकान बना डाले हैं लेकिन आदत ....। रमेश चचा कहते हैं- 'हमारे आफिस में सब चकाचक रहता था। टैम पर चाय आती थी और घण्टी बजाते ही चपरासी।' चालक पद से रिटायर होकर आए कुलवन्त रैना को बहुत नाराजी है। कह रहा है- 'जब बस में दिल्ली लखनऊ चलता था, अपने हिसाब के ढाबे में दाल मखनी और हांडी चिकन का स्वाद मिलता था। घर में आकर सूख चुका हूँ।'

दाज्यू, सबकी अपनी रंगीनियत ठैरी। वैसे भी घोर कलजुग चल रहा है। कलजुग में चुरैन भी खुशबू होने वाली ठैरी। देख नहीं रहे हो, पगलट सरीखे रौब दिखाने लगे हैं। उन्हें सड़ैन, चुनैन, भुवनैन, गनैन, हन्तरैन किसी में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता है। वह तो बस अपनी ही करते हैं। सुना है अयोध्याय के राममन्दिर में नवनियुक्त सीईओ जीतेन्द्र मिश्रा आ चुके हैं। दाज्यू, हमें तो अब फीका खाना भी लुढ़ैन लगने लगा है और क्या कहें?

नैनीताल जिले के रानीबाग क्षेत्र में बहुत हकाहाक होने लगी है। जियारानी के नाम से पहचान रखने वाले इस इलाके में शनि मन्दिर बना दिया गया है, अब कत्यूरियों की जागर कैसे लगेगी बल। दाज्यू, हल्द्वानी बड़ा शहर ठैरा इसमें जिधर-तिधर मन्दिर बनते जा रहे हैं। इतिहास-भूगोल की बात करने वाले हकाहाक करेंगे ही क्योंकि जिधर-तिधर से आकर धनिया बोने वाले बहुत हो चुके हैं। कलजुग में घाट जाकर पिकनिक मनाने वाले भी कम थोड़ा ही हैं। दाज्यू, चाहे कितना ही जतन कर लो, होनी कोई नहीं टाल सकता है बल। तभी तो तफन्दरगिरी खूब होने लगी है। शहर की नाबालिक को शादी का झांसा देकर मेरठ निवासी दो साल तक दुष्कर्म करता रहा बल। दाज्यू, उधर ज्योलीकोट में दूषित पानी से त्राही-त्राही मच गई। कह रहे हैं जलजनित बीमारी हुई थी। हम तो पहले से कह रहे हैं कि पेय पदार्थ के नाम पर मल-मूत्र सब घुलमिल गया है। गू-कचार सब खुशबूदार बनाकर बाजार में परोसा जा रहा है बल। दाज्यू, रानीखेत उपमण्डल के सबसे बड़े गोविन्द सिंह माहरा अस्पताल में नेताओं के आए दिन अनौपचारिक निरीक्षण व वीडियो बनाने से चिकित्सा स्वास्थ्य संघ को गुस्सा आ गया है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

छोटी विलायत.......

प्रथम पृष्ठ का शेष

से एलटी करने के बाद शिक्षा विभाग में सेवा की। इसी प्रकार गर्ब्यांग के पधान परिवार में मनोरथ सिंह गर्ब्याल जी श्रीमती कुन्ती देवी के घर जमन सिंह गर्ब्याल का जन्म हुआ। इन दोनों परिवारों ने भारत तिब्बत व्यापार के दिनों को देखा और चुना है। पधानचारी होने के नाते सक्षम होते हुए हमेशा अपनी मातृभूमि के लिये समर्पित रहे हैं।

बातचीज के दौरान श्रीमती सात्रित्री गर्ब्याल अपने पुराने दिनों में लौटते हुए बताती हैं- धारचूला से नैनीताल पढ़ाई को जाते समय दो दिन लग जाते थे। पहले अल्मोड़ा पहुंचकर एम्बेसेडर होटल में रुके थे फिर अगले दिन नैनीताल जाते थे। आने-जाने के लिये दन्या वाली रोड पूरी तरह धूलपट्ट थी। पिघलताल हिमालय के संस्थापक स्व.दुर्गासिंह मर्तोलिया को याद करते हुए वह बताती हैं- दुर्गा सिंह एमए में थे और वह बीए की पढ़ाई कर रही थीं। तब डीएसबी कैम्पस में छात्र संघ चुनाव को लेकर पहाड़ यानी सीमान्त की लहर थी। दूर-दूर से आकर पढ़ने वाले सभी साथी एकजुट हो गये और दुर्गा दा को अध्यक्ष बनाया। अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान सावित्री जी सन् 1968 में सरकारी सेवा में लगी। गर्ब्यांग के जमन सिंह जी के साथ 1980 में इनका विवाह हुआ। अपनी 33 साल की सेवा में गोपेश्वर बदरीनाथ में अधिक समय व्यतीत किया। सन् 2003 कांग्रेस के टिकट पर इन्हें ध ारचूला नगर पंचायत सीट पर चुनाव लड़ाया गया और यह चैयरमैन बनीं। घर में हर प्रकार से सक्षम इस परिवार का ध्येय अपने इलाके को सुदृढ़ करना था ऐसे में कई महत्वपूर्ण कार्य इनके द्वारा किये गये। एनएचपीसी द्वारा लीज पर लिया गया स्थान स्टेडियम बनना था लेकिन इसमें हीलहवाली हो रही थी। तत्कालीन डीएम नवीन पाण्डे जो सावित्री जी के सहपाठी रहे थे, घूमने के लिये नारायण आश्रम आए थे। वर्षों बाद उनसे मिलकर एनएचपीसी वाली भूमि को लेकर खेल मैदान के रूप में विकसित करवाया। इसी प्रकार धारचूला का भोटिया पड़ाव बनाने का कार्य हुआ। श्रीमती सावित्री कहती हैं- डीएम पाण्डे जी के संरक्षण में ही वह उम्दा कार्य हो सके। काली नदी से नहर के लिये लाया गया बजट ठेकेदारों को नहीं दिया बल्कि सिंचाई विभाग की देखरेख में कार्य करवाया। नदी के बहाव से धारचूला को बचाने लिये गुणवत्ता युक्त कार्य का होना जरूरी था। उसी दौर में जनजाति व अन्य पिछड़े लोगों के लिये प्रशिक्षण केन्द्र खुलवाया गया जिसका आज तक लाभ हो रहा है। इसमें कम्प्यूटर शिक्षा भी दी जाती है। इसके अलावा बारातघर, गैराज और भारत नेपाल सीमा पर प्रहरियों के एक सेड बनवाया गया ताकि गर्मी, बरसात के दिनों में पुल के पास पहरा देने वाले आराम से रह सकें।

जमनसिंह जी और सावित्री देवी कैलास के मुख्य पड़ाव और तिब्बत व्यापार की देखी और सुनी यादों को बताते हैं कि पांगू कैलास मानसरोवर यात्रा का मुख्य स्थान है। सिरखा, सिर्दांग होते हुए कैलास यात्री यहीं से जाते रहे हैं। पहले समय में इस स्थान पर सफरी डाक्टरों की ड्यूटी लगती थी। सफरी यानी यात्रा में जाने वालों को देखते हुए इन्हें तैनात किया जाता था। पांगू में भीम सिंह पधान जी यात्रियों के लिये सत्तू गुड़ आदि तैयार रखते थे। यात्रा के दौरान इस प्रकार की खाद्य सामग्री को पसन्द किया जाता है क्योंकि इन्हें सत्तू को पानी में घोलकर भी गुड़ के साथ खाने के लिये तैयार कर लेते हैं, मौसम के लिहाज से गर्म तासीर भी होती है। लिपू दर्रे से होते हुए तिब्बत व्यापार होता था और व्यापार टैण्ट लगाकर रहते थे। तकलाकोट में इसका लगान पड़ता था। बचपन में अपने बुजुर्गों के साथ एक बार जमन सिंह जी को इस यात्रा में जाने का अवसर मिला।

जमन सिंह जी बताते हैं कि सीमान्त का गर्ब्यांग 250 परिवारों का सुन्दर स्थान था, जिसे छोटी विलायत के नाम से पुकारते थे। यहाँ तीन-चार मंजिले के नक्कासीदार शानदान मकान थे, इनमें सबसे ऊपर मंजिल पर रसोई बनाई जाती थी। सन् 1957 से ग्राम में भूधंसाव हुआ और धीरे-धीरे भारी नुकसान हो गया। चूंकि पढ़ाई के लिये मौसम अनुसार माइग्रेशन व्यवस्था थी और ग्राम से हम लोग धारचूला आते थे लेकिन गर्ब्यांग की हालत देखते हुए जूनियर हाईस्कूल गर्ब्यांग को गुंजी में खोला गया। दूसरी जगह स्कूल खुलने से विद्यार्थी संख्या एकदम नहीं हो सकी, ऐसे में स्कूल की मान्यता बरकरार रखने के लिये पिता जी (पधान मनोरथ सिंह) ने मेरा व चचेरे भाई का प्रवेश उस स्कूल में करवाया। हमें स्कूल को मान्यता मिलने की खुशी थी।

गर्ब्यांग में भूधंसाव का खतरा झेल रहे लोगों को तराई के दिनेशपुर में जगह दी गई, उसके बाद सितारगंज में परिवार भूमि आवंटन हुई। सिद्ध गर्ब्यांग नामक स्थान में गर्ब्याल परिवार रहते हैं। इस प्रकार अपनी ढेरों यादों के साथ यह गर्ब्याल दम्पत्ति रेशमबाग, कुसुमखेड़ा हल्द्वानी में निवास कर रहा है लेकिन इनकी यादों का हिमायल वहीं है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हालात —— ये कैसी मुसीबत में मसूरी

इतना नहीं झेल पाएंगे पहाड़

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

अंग्रेजी फौज के कैप्टेन फेडरिक यंग द्वारा मसूरी को बसाने की शुरूआत 1820 के आसपास की गयी थी। साढ़े छह हजार फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित मसूरी शहर चारों ओर से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है जो राजधानी देहरादून से मात्र 35 किलोमीटर की दूरी पर है। भारत में अंग्रेजों के कारण हिल स्टेशन बना है। दरअसल, आजादी से पहले जब गर्मियां अपने चरम पर होती थीं तो ये अंग्रेज अपने पूरे परिवार के साथ यहाँ आकर रुकते थे। इसके बाद उन्होंने सोचा कि ये तो बिजनेस करने का अच्छा ऑप्शन हो सकता है। उन्होंने पैसे कमाने के लिए यहाँ छोटी-छोटी झोपड़ियां बनवाई जो अब रजिर्ट्स में तब्दील हो चुकी हैं। धीरे-धीरे यहाँ बाजार, चर्च, स्कूल बन गए। सड़कों का भी विकास हो गया। अब ये जगह एक मशहूर हिल स्टेशन बन गई।

मसूरी की बात करें तो बादलों से घिरी पहाड़ियां, ठण्डी हवा, खूबसूरत वादियां और शान्त माहौल इस जगह को खास बनाती हैं। शायद इसी वजह से इसे प्यार से क्वीन ऑफ हिल्स यानी कि पहाड़ों की रानी कहा जाता है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में बसा मसूरी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। ये दिल को सुकून देने वाली एक ऐसी जगह है जहाँ हर कोई बार-बार जाना चाहता है। ब्रिटिश राज के समय से ही मसूरी लोगों की पसन्दीदा जगह रही है। यहाँ की हरियाली, ऊँचे पहाड़, पुराने बाजार और घूमने की ढेर सारी जगहें इसे और भी खास बना देती हैं। यहाँ पर ज्यादाँ लोग ग्रुप्स में आना पसन्द करते हैं, तो वहीं सोलो ट्रैवलर्स की संख्या भी कम नहीं होती है। दून घाटी के ऊपर बसा, साल के ज्यादातर समय कोहरे से घिरा और औपनिवेशिक काल की पुरानी इमारतों से सजा मसूरी, लम्बे समय से पहाड़ों की रानी कहलाता आया है। यह नाम पर्यटन अभियानों या आधुनिक ब्रांडिंग से नहीं मिला, बल्कि इस शहर की प्राकृतिक सुन्दरता, जलवायु और आकर्षण के अद्भुत मेल से आया है। आज भी, मसूरी कई शोरगुल भरे और तेजी से विकसित हो चुके हिल स्टेशनों से अलग है। इसका आकर्षण इसकी शान्त गति, समृद्ध इतिहास और पहाड़ों से परे दूर तक फैले मनोरम दृश्यों में निहित है। दूरदराज की पहाड़ी बस्तियों के विपरीत, मसूरी सुलभ होने के साथ-साथ परिष्कृत भी थी, जहाँ सैरगाहें, गिरजाघर और ऐतिहासिक होटल इसे एक विशिष्ट पहचान देते थे। समय के साथ, इसकी प्राकृतिक सुन्दरता और प्राचीन आकर्षण के सन्तुलन ने इसे अन्य पहाड़ी स्टेशनों से अलग कर दिया, जिससे पहाड़ों की रानी का खिताब सार्थक और स्थायी बन गया।

मसूरी के रहने वाले बिल्लू कहते हैं कि उनकी कई पुश्तें मसूरी में रही हैं। उनका बचपन भी इन हरी पहाड़ियों में बीता है। धीरे-धीरे मसूरी बदलता जा रहा है। एक दिन ऐसा आएगा कि मसूरी का सिर्फ नाम ही

बचेगा। बिल्लू का कहना है कि जब से उत्तराखण्ड अलग राज्य बना है तब से इसके पहाड़ों को खोदा जा रहा है। हमने देखा की बरसात में अब मसूरी की सड़कों पर लैंडस्लाइड बहुत ज्यादा होने लगे हैं, लेकिन पहले इतना नहीं हुआ करता था। कंस्ट्रक्शन का काम इतना ज्यादा हुआ है, यहाँ पहाड़ों को काटकर होटल-रिसोर्ट बनाए गए हैं। दूसरे राज्यों के बिल्डर इनका संचालन करते हैं। यहाँ जो भी कूड़ा होता है उसके निस्तारण की कोई उचित व्यवस्था न होने से लोग खुले में ही इन्हें डाल देते हैं. इसे जल स्रोत बाधित होते हैं, बन्द हो जाते हैं, जिस पानी को बहकर निकल जाना था वह पहाड़ों में ही अवशोषित होता रहता है। जब उत्तराखण्ड राज्य नहीं बना था, तब हमारा सपना था कि अपना राज्य होने से मसूरी समेत पहाड़ों की दशा सुधरेगी। स्वास्थ्य सुविधाओं, सड़कों से लेकर रोजगार मिलेगा। मसूरी पर्यटन स्थल तो बना लेकिन यहाँ बड़े-बड़े सेठों के होटल रिसोर्ट चल रहे हैं, जो उत्तराखण्ड के है ही नहीं।

मसूरी शिवालिक रेंज में है। जिन पहाड़ों की उम्र ज्यादा नहीं होती है, वे कच्चे पहाड़ हैं। दिन पर दिन मसूरी में हो रहे कंस्ट्रक्शन से यहाँ के पहाड़ इतना भार नहीं झेल पाएंगे, इसलिए सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए। पहाड़ों की रानी मसूरी में ढुलमुल निर्माण और प्रशासन की अनदेखी से परेशान लोगों गुस्सा चरम पर है। सड़कें बदहाली के दौर से गुजर रही हैं। आम जनजीवन अस्त-व्यस्त है। पानी वाला बैंड के पास इसी सीजन सड़क दो बार धंसकर बह चुकी है। हादसों का खतरा भी हर पल मंडरा रहा है।

पेंशनरों की मांग पर शासन का यू-टर्न

मांगों के परीक्षण हेतु समिति गठित करने के २२ माह बाद मामले को 8वें वेतन आयोग की संस्तुति पर टाला

यू-टर्न से 1.50 लाख पेंशनर्स हैरान, एकता मंच ने जवाबदेही के लिए सीएम को भेजा पत्र

हल्द्वानी। पेंशन के राशिकरण की कटौती की अवधि कम करने और अतिरिक्त पेंशन वृद्धि की मांग के परीक्षण हेतु समिति गठित करने के 22 माह बाद उत्तराखण्ड शासन ने यू-टर्न लेते हुए अब इन मांगों को आठवें वेतन आयोग की संस्तुति पर टाल दिया है। उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच ने पूरे मामले में गहरी हैरानी व नाराजगी जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर ऐसी टाल-मटोल एवं भ्रामक कार्यप्रणाली के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग की है।

उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष रमेश चन्द्र पाण्डे द्वारा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और मुख्य सचिव को मेल से भेजे गये पत्र के अनुसार पेंशन के राशिकरण की वसूली की अवधि कम किये जाने और 65-80 वर्ष की आयु पर 5 से 15प्रतिशत अतिरिक्त पेंशन वृद्धि की मांग के परीक्षण हेतु वित्त विभाग ने 11 नवम्बर 2024 को निदेशक, कोषागार की अध्यक्षता में 3 सदस्यीय समिति बनाकर 30 दिन में रिपोर्ट मांगी थी। इस सम्बन्ध में 14 फरवरी 2025 को अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बैठक हुई और 11 अप्रैल 2025 को वित्त विभाग द्वारा निदेशक, कोषागार को पत्र भेजकर तत्काल सुविचारित प्रस्ताव/आख्या शासन को भेजने के निर्देश दिये गये, लेकिन इसके बाद भी शासन को समिति की संस्तुति नहीं मिली।

इस बीच मजेदार बात यह रही कि सेवानिवृत्त कार्मिक समन्वय समिति द्वारा उक्त दो मांगों सहित कुल 4 मांगों को लेकर 3 जनवरी 2026 को मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा गया और मुख्यमंत्री के स्तर से मिले आश्वासन की खबर अगले दिन सभी प्रमुख अखबारों में प्रकाशित हुई। दूसरी ओर इसी ज्ञापन के सन्दर्भ में वित्त विभाग द्वारा 26 फरवरी 2026 को समिति के मुख्य संयोजक सुमन सिंह वाल्दिया को प्रेषित प्रत्युत्तर में बताया गया कि समिति ने अब तक शासन को कोई संस्तुति नहीं दी है।

मंच के संस्थापक अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे ने बताया कि पूरे मामले में हैरानी भरा नया मोड़ तब देखने को मिला जब कार्मिक एवं सतर्कता विभाग द्वारा पेंशनर्स की मांगों के सम्बन्ध में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में 12 अगस्त को हुई बैठक का कार्यवृत्त जारी किया गया। 19 अगस्त को जारी इस कार्यवृत्त के बिन्दु 4 एवं 5 में इन मांगों के बारे में पूर्व प्रक्रिया को नजरअन्दाज करते हुए यह कहकर टाल दिया गया कि '8वें वेतन आयोग की संस्तुति के क्रम में वित्त विभाग द्वारा विचार किया जायेगा'।मंच ने सवाल उठाया कि 8वां वेतन आयोग केन्द्र के लिए है, राज्य के लिए नहीं, और केन्द्र ने उसे इन मांगों पर कोई अधिकार (Terms of Reference) दिया ही नहीं। जब मामला 8वें वेतन आयोग का ही था तो समिति का गठन ही क्यों किया गया। श्री पाण्डे ने कहा कि इस टाल-मटोल और भ्रामक कार्यप्रणाली से जहाँ एक ओर राज्य प्राप्ति के आन्दोलन में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले प्रदेश के लगभग 1.50 लाख पेंशनर्स के बीच गहरी हैरानी व नाराजगी व्याप्त है, वहीं दूसरी ओर सरकार की छवि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

ज्योतिष की बातें 299

26 अक्टूबर 2026 को बुध मित्रराशि तुला में प्रवेश करेगा। इस समय बुध अत्यन्त बली और शुभ हो रहा है। फलदीपिका के अनुसार बुध 2, 4, 6, 8 व 11 वें स्थान पर शुभ फल प्रदान करता है। अत: अगले 68 दिन बुद्धि, स्मरण शक्ति, व्यापार, वाणिज्य, गणित, लेखन कार्य, लेखन सामग्री, संचार माध्यम आदि के क्षेत्रों में कन्या, कर्क, वृषभ, मीन, मकर व धनु राशि के जातकों को बुध अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य राशियों के लिए भी सामान्य शुभ रहेगा।

यह अत्यन्त स्थूल गोचर फल है, व्यक्ति विशेष्ज्ञ के लिए उसका सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली आदि पर निर्भर करता है।

महालय प्रारम्भ- आश्विन कृष्णपक्ष प्रतिपदा अपराह्न व्यापिनी तिथि से महालय प्रारम्भ होता है। अत: रविवार 27 सितम्बर 2026 से पितृपक्ष प्रारम्भ हो जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 281

पानी के लिए हाहाकार

आजकल सभी जगह पानी के लिए हाहाकार मचा है, कहीं पर अधिक बरसात हो जाने के कारण और कहीं पर बरसात न हो पाने के कारण। सभी लोग भगवान को दोष दे रहे हैं। ये लोग यह नहीं समझते कि भगवान को सब पता है कि किसको पानी देना है और किसको पानी नहीं देना है। किसको पानी देना है और कब पानी देना है। कौन कितने पानी में है और किस में कितना पानी है। कौन पानी-पानी हो रहा है। कौन पानी में आग लगा रहा है। इसलिए किसको प्यासा मारना है और किसको पानी पिला-पिला कर मारना है। भगवान को सब पता है।

वैसे भी यह जीवन पानी का बुलबुला है। इसलिए हमें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। भगवान की इच्छा में ही अपनी इच्छा जो मान लेता है वही वास्तव में सुखी और सन्त है। इसलिए 'हरि शरणम् एव केवलम्'।

-ओंकार नाथ कोष्टा

रेलवे भूमि विवाद पर सुप्रीम कोर्ट में 18 नवम्बर को होगी सुनवाई

हल्द्वानी। रेलवे भूमि पर अतिक्रमण से जुड़े बहुचर्चित मामले में सुनवाई टलने के बाद अगली तिथि 18 नवम्बर को तय है। प्रदेश सरकार और रेलवे की ओर से मामले में जल्द सुनवाई की मांग की गई लेकिन दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं को सुनने के बाद कोर्ट ने अगली तारीख निर्धारित करने का आदेश दिया था।

रेलवे एवं प्रदेश सरकार बनाम हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी से जुड़ा यह मामला है जो हल्द्वानी के रेलवे अतिक्रमण प्रकरण को लेकर लम्बे समय से कानूनी लड़ाई चल रही है।

सुनवाई के दौरान उत्तराखण्ड सरकार और रेलवे की ओर से शीघ्र सुनवाई का आग्रह किया गया। दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद अदालत ने अलगी तारीख निर्धारित करने के निर्देश दिए। मुख्य याचिकाकर्ता हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी की ओर से सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता कॉलिन गोंज़ाल्वीज, मानिक गुप्ता, रिया यादव और फ़ेज़ान अंसारी ने पैरवी की। इस मामले पर सबकी निगाहें टिकी हुई हैं।

अपनी स्थापना के स्वर्णजयन्ती की ओर बढते कदम

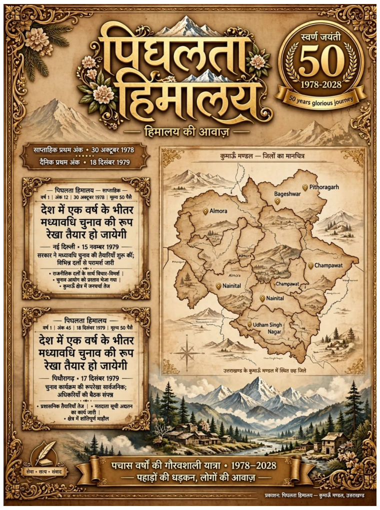

पचास साल की लम्बी यात्रा को लेकर पिघलता हिमालय दस्तावेज तैयार करेगा। इस अंक के लिये आपके सुझाव आमंत्रित हैं

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

समस्याओं को लेकर डीएम से मिले

हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महासभा के प्रदेश अध्यक्ष आनन्द सिंह नेगी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल ने डीएम से भेंट कर बागजाला और सुल्ताननगरी में जल जीवन मिशन के तहत पाइप लाइन बिछाने के लिये खोदी गई सड़कों की बदहाली सहित अन्य सस्याओं को गिनाया।

धौलीनाग महोत्सव का आयोजन

काण्डा। ऋषि पंचमी के अवसर पर क्षेत्र के प्राचीन मन्दिर में धौलीनाग महोत्सव का आयोजन किया गया। 18 ग्राम सभाओं से 300 लीटर दूध एकत्र कर विशेष पूजन विधा के आवा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। जिसमें स्थानीय कलाकारों ने सुन्दर प्रस्तुतियां दीं।

बजट के अभाव में पार्किंग कार्य रुका

बागेश्वर। शहर में पार्किंग की समस्या को हल करने के लिए प्रस्तावित मल्टीलेवल पार्किंग पिछले चार वर्षो के बजट के अभाव में लटकी हुई है। प्रस्तावित पार्किंग में 60 छोटे वाहनों और 13 बसों को खड़ा करने की क्षमता होगी। बजट की कमी के कारण वर्ष 2021 से निर्माण कार्य आगे नहीं बढ़ पा रहा है।

लोन फर्जीवाड़े में कर्मचारी गिरफ्तार

अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड राज्य सहकारी बैंक से कूटचरित दस्तावेजों के आधार पर 19 लाख रुपये का लोन लेकर धोखाधड़ी करने के मामले में पुलिस ने उत्तराखण्ड राज्य सहकारी बैंक लि. शाखा अल्मोड़ा के प्रबन्धक की शिकायत पर कर्मचारी को गिरफ्तार किया है।

युवा तय करेंगे भारत की दिशा

हल्द्वानी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने युवा सम्वाद कार्यक्रम में कहा कि युवा तय करेंगे विकसित भारत की दिशा। कहा विकसित भारत बनाने की राह पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में युवा शक्ति को नई दिशा मिली है। डिजिटल इण्डिया, स्टार्टअप इण्डिया, स्किल इण्डिया, मेक इन इण्डिया और खेलो इण्डिया जैसी पहलों ने युवाओं को आगे बढ़ने के अवसर दिए हैं।

भर्ती घोटाला फिर से चर्चा में

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की ग्राम पंचायत विकास अधिकारी परीक्षा 2016 में कथित अनियमितताओ से जुड़े मनी लॉण्ड्रिंग मामले में ईडी ने छापेमारी की। ईडी छापे से हलचल है। यूकेएसएस एससी के तत्कालीन चैयरमैन और सचिव परीक्षा नियन्त्रक तमाम जगह तलाशी हुई। पूर्व सीएम हरीश रावत के तत्कालीन निजी सहायक चन्दन जीना के आवास से बेसकीमती सामान बरामद हुआ है।

परिक्रमा

फचैऽक

हमी राष्ट्रहम वन्देमातरम, मुद्द बणि गोछ पुर देश में
सबै जाग हकाक योई छु, क्वेलै तौपिक न्हांतन रेश में
क्वेलै तौपिक न्हांतन देश में, खबरनकि हेडिंग योई छु
अणहोति अकर चाहा चीनि, गरीब सरकार कैं चाई छु
खुशखुसाट हैरौ लोगन में, चुनावन में करन स्वागतम
समस्यान माथि भैटि गोछ, हमर राष्ट्रगीत वन्देमातरम।

गणेश पाण्डेय

वरिष्ठ नागरिक कल्याण की बात तब मानें जब उनकी देखरेख व्यवस्था हो

गिरीश उप्रेती

देहरादून। प्रधानमंत्री और सरकार बराबर वरिष्ठ नागरिक कल्याण की बात कर रही है लेकिन व्यवहार में यह सब कितना सच है, इसे चिकित्सा व्यवस्था से देखा जा सकता है। यदि वास्तव में देश-प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान देना है तो उनकी देखरेख की व्यवस्था दुरुस्त करनी चाहिये। उदाहरण के लिये देहरादून की डिस्पेंसरी का हाल देखा जा सकता है। सीजीएचएस कार्ड धारकों/पेंसनरों के लिये उत्तराखण्ड में तीन डस्पेंसरी हैं। इनमें दस-बारह डाक्टर पूरे प्रदेश में हैं जबकि रिटायर्ड कर्मचारी

देहरादून की डिस्पेंसरी में डॉक्टर और दवाई ला दो पहले

लगभग 70000 हैं। देहरादून के आसपास रह रहे कर्मी तो थोड़ा सुविधा में इसलिये हैं कि वह सुबह चार बजे टोकन ले लेते हैं फिर 10-12 बजे तक उनका नम्बर आ जाता है लेकिन जो दूरस्थ क्षेत्रों से आते है। उन्हें बेहद परेशानी का सामना करना पड़ता है। चमोली, उत्तरकाशी, मुनस्यारी, धारचूला से तक आकर लाइन लगने की प्रक्रिया और पूरी परिक्रमा करनी होती है, इसपर भी यदि रेफर किया गया तो क्या कह सकते हैं? सीजीएसएच द्वारा नामित डाक्टर के वहां लाइन फिर जो दवा उनके द्वारा लिखी जाएगी उसे डिस्पेंसरी में लाइन लगाना, जो दवा नहीं मिल पाई उसे तीसरे दिन लेने जाना। यानी की इस पूरी परिक्रमा में वरिष्ठ नागरिक/पेंशनर बहुत परेशान हो जाता है। इन हालातों को देखते हुए केन्द्र व राज्य सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय को पहल करनी चाहिये ताकि स्वास्थ्य से लाचार वरिष्ठ जनों को किसी प्रकार की परेशानी व अनावश्यक खर्चे से बचाया जा सके।

कर्मी में खड़िया खनन का विरोध

बागेश्वर। दूरस्थ क्षेत्र कर्मी में खड़िया खनन की तैयारी की भनक लगते हुए ग्रामीणों में भारी रोष है। 1983 की भीषण आपदा में 37 लोगों और कई मवेशियों के मौत का मातम देख देख हुए कर्मी क्षेत्र में प्रस्तावित खड़िया खनन को लेकर गुस्सा जताया है। नाराज ग्रामीणों ने कहा कि यदि खनन की स्वीकृति मिली तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा। ग्राम पंचायत दोबाड़ की प्रधान द्रौपदी देवी के नेतृत्व में ग्रामीणों ने नारेबाजी करते हुए डीएम को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने दोबाड़ और कर्मी क्षेत्र के विभिन्न तोकों में खड़िया खनन की प्रक्रिया को पूरी तरह से निरस्त करने की मांग की।

नैनीताल का समग्र तकनीकी सर्वेक्षण हो

नैनीताल। माँ नयना देवी नैनीताल व्यापार मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष पुनीत टण्टन ने नैनीताल में भारी बारिश के कारण उपजे हालातों तथा लोअर व अपर माल रोड की सम्वेदनशील स्थिति को देखते हुए शासन व प्रशासनसे नैनीताल की सुरक्षा को लेकर तत्काल एक समग्र तकनीकी सर्वेक्षण कराये जाने की मांग की है। उनका कहना है कि यह सर्वेक्षण भूवैज्ञानिकों तथा आईआईटी के विशेषज्ञों एवं अन्य आवश्यक तकनीकी संस्थानों की संयुक्त टीम से कराया जाना चाहिए।

श्री टण्डन ने कहा कि नगर के सम्वेदनशील क्षेत्रों का चिन्हीकरण, विशेषज्ञों की टीम द्वारा वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर नैनीताल के भूस्खलन सम्भावित व सम्वेदनशील क्षेत्रों की सटीक पहचान की जाए और समय रहते आवश्यक सुरक्षात्मक व सुरक्षा कदम उठाए जाएं। साथ ही सम्वेदनशील क्षेत्रों में आवासीय बस्तियां या घर स्थित हैं वहाँ किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिये आपदा टीम तैनाती सुनिश्चित हो।

लोहाघाट विधायक अपने गुस्से पर स्वयं घिर चुके हैं, राजनीति गरमायी

लोहाघाट। विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे निकट आ रहे हैं, राजनीति गरमाने लगी है। इस बीच लोहाघाट कांग्रेस विधायक खुशहाल सिंह अधिकारी अपने गुस्से से स्वयं घिर चुके हैं। जिले के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए जिस प्रकार वह भड़के उससे नाराज होकर कर्मचारियों ने विरोध प्रदर्शन कर डाला। महिला समूह द्वारा भी जबर्दस्त प्रदर्शन किया गया। भाजपा नेताओं द्वारा भी विधायक के बोलों पर ऐतराज जताते हुए कहा गया कि वह किसी को भी सरासर भ्रष्टाचारी नहीं कह सकते हैं। ईमानदार कार्य करने वाले अधिकारियों पर इस प्रकार की टिप्पणी अशोभनीय है। प्रधानों को लेकर सीडीओ कार्यालय में प्रधानों को लेकर पहुँचे और चम्पावत जिले में भ्रष्टाचार का बडा आरोप

चम्पावत जिले में भ्रष्टाचार का बड़ा आरोप

लगाया। कहा कि ग्राम पंचायत के कार्यो पर कमीशन का खेल चल रहा है। कहा डीपीआरओ उनका फोन तक नहीं उठाते। भ्रष्टाचार हो रहा है। जेई पर आरोप लगाते हुए वह लिये-दिये पर कार्य कर रहे हैं। ऊपर से सरकार की धमकी देते हैं। इन पर कार्रवाई होनी चाहिये।

बताते चलें कि विधायक अपने कुछ साथियों के साथ ही जिस प्रकार से गरजे थे वह सब सोशल मीडिया पर दिखाया गया। विधायक ने सीधे कमीशन बाजी का आरोप लगाते हुए हंगामा कर डाला। इसके बाद चम्पावत जिले में मची उथल-पुथल का परिणाम था कि मुख्य विकास अधिकारी का स्थानान्तरण हो गया। इसके बाद बीडियो पाटी क्षेत्र भी को भी स्थानान्तरित कर दिया गया। महिला अधिकारी एपीडी विम्मी जोशी के साथ विधायक की खूब बहस हुई थी। बाद में विधायक के व्यवहार से नाराज लोगों ने भी रोष जताया है। एपीडी विम्मी जोशी के साथ किये गये दुर्व्यवहार से गुस्साए महिला समूह ने प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी से विधायक के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। बाद में विधायक ने अधिकारी को ईमानदार कहते हुए नरमी दिखाई। राजनीतिक गहमागहमी के साथ कांग्रेस विधायक अपनी बात रख रहे हैं और भाजपा संगठन अपनी बात। कुल मिलाकर नेताओं का गुस्सा और भविष्य की राजनीति का जोर पूरा है।

भारत-नेपाल मैत्री पुल के साइनबोर्ड पर विवाद

झूलाघाट। भारत-नेपाल सीमा पर धारचूला तहसील के छारछुम और नेपाल के दार्चुला जिले के महाकाली नगर पालिका पार्क-8, असीगाड़ा को जोड़ने वाले नवनिर्मित भारत नेपाल मैत्री मोटर पुल पर लगाए गए साइनबोर्ड को लेकर विवाद हुआ है। असल में स्वगत बोर्ड पर छारछुम का नाम लिखे जाने पर दार्चुला में नाराजी जताई।

क्वारब बाईपास में आफत मची हुई है

अल्मोड़ा। क्वारब बाईपास में आफत मची हुई है। लम्बे समय से बार-बार इस मुख्य मार्ग पर अवरोध होने से यात्रा में दिक्कत हो रही है। मलबा गिरने से क्वारब के पास खतरे को देखते हुए बड़े वाहनों पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है।

निष्कासन प्रक्रिया की जांच की मांग

द्वाराहाट। श्री नैथाना देवी मन्दिर विकास समिति नौबाड़ा के पूर्व अध्यक्ष गणेश दत्त गौड़ ने समिति की सदस्यता सूची और उनके निष्कासन प्रक्रिया पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने प्रशासन से निष्कासन प्रक्रिया की जांच करने, अक्टूबर के पहले सप्ताह में एजीएम और चुनाव कराने की मांग की है।

छात्र संघ चुनाव के बहाने ताकत दिखाते नेता

विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश में छात्र संघ चुनाव का घमासान चल रहा है। बड़ी छात्र संख्या वाले कालेजों को छोड़ शेष में छात्र-छात्राओं को इन चुनावों को लेकर उत्साह नहीं है लेकिन छात्र संघ चुनाव के बहाने नेता अपनी सी ताकत दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। पिछले वर्षों की तरह इस बार चूक न करते हुए सितम्बर माह में चुनाव समय पर कराने का निर्णय हुआ है, इससे यह भी साफ दिख रहा है कि विधानसभा चुनाव को देखते हुए छात्रों के कार्यक्रम समय पर निपटाने की तैयारी है ताकि किसी को कहने का कोई अवसर न मिले। चुनाव को लेकर छात्र नेताओं के साथ बाह्य तत्व धार देते दिख रहे हैं।

हल्द्वानी के एमबीपीजी कालेज में लगातार हंगामे ने माहौल खराब किया है। चुनाव को लेकर जुटे नेताओं को बाहरी संरक्षण की बात कही जा रही है। इसी प्रकार तराई के कालेजों में युवा जोश दिखाई दे रहा है। पौड़ी छात्र संघ चुनाव में एनएसयूआई की एकतरफा जीत से खुशी मनाई जा रही है। छात्र संघ चुनाव में इस बार इस बात को लेकर भी बाहर से नेता जुटे हुए हैं क्योंकि उन्हें आम चुनाव में युवा शक्ति अपने पीछे चाहिये। यही कारण है कि छात्र संघ चुनाव को लेकर कालेज प्रशासन और पुलिस के सामने चुनौती है। दूसरी ओर भाजपा-कांग्रेस-अन्य पार्टियों से जुड़े छात्र नेता अपने छल-बल का प्रयोग कर रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास, पुस्तकों का...

प्रथम पृष्ठ का शेष

उत्तराखण्ड के इतिहास में वह लिखते हैं, '.... इसलिए उत्तराखण्ड के अध्ययन की श्रोत सामग्री हैं ये सभी मानवीय जातियां। इनके दिक्काल को युधिष्ठिर सम्वत के छत्तीस वर्ष पूर्व की तिथि है यह। ईसा के वर्षों के मानक में यह तिथि तीन हजार दो सौ बयालिस ई.पूर्व में बैठती है....'

उनकी पुस्तक जतलाती हैं कि किस लगन मेहनत से अंग्रेज अफसरों ने हमारे पहाड़ की अघोषित, अनडाक्यूमेंटेड भूमि की पैमाइश की और जीवन के हर क्षेत्र के ज्ञान के लिए गहरे अध्ययन किये। आज भी उत्तराखण्ड के आज के शोध कर्ता बिना इनके शोध के अध्ययन किये बिना आगे नहीं बढ़ सकते चाहे वह किसी विषय के हों।

वह अपनी किताब में महाभारत को बहुत उर्द्धत करते हैं। उनके हिसाब से उत्तराखण्डी सारे वंशों वर्णों के मिश्रित रचनाएं हैं। अपनी संस्कृति में भी सोच में भी। लड़ाइयां, आज की या कभी की में वही जियोपालिटिक्स आदमी का अपने को स्थापित करने का खेल है। आज भी अस्त्र शस्त्र या ताकतवर सेना से ही विजय नहीं हासिल हो सकती सकता। उसके लिए छल, छद्म या तकनीक का हूनर चाहिए। अपनी पुस्तक 'सीरा के मल्लराजवंश' पर वह लिखते हैं कि पुरूपन्त ने रूद्रचन्द के कहने पर उनको परास्त करने के लिए अपनी नानी से टिप्स लिये और पानी को हथियार बना कर भी काम किया। गुबरैले के आशावान लगातार प्रयास, को देख कर उसे बार बार लड़ भिड़ने की प्रेरणा मिली। आज के भारत ने जिस तरह पाकिस्तान का पानी बन्द करने की रणनीति बनायी उसने भी बनायी। आज वह अपने भीषण हथियार ब्रहमोस्त्र चीन के पास या एशियाई, अरब देशों को बेच रहा है वह भी तो एक टैक्ट है कि अपने शत्रु पक्ष को घेर लो। अपनी ताकत, हैसियत बढ़ाने के लिए खानदानी सम्बन्ध बनाये जाते हैं, राजा किसी खानदानी महिला से विवाह करते हैं। वह लिखते हैं, 'वह दो दलों की ऐसी लड़ाई है जिसमें पूरी फौज न लड़ाकर, दोनों के प्रतिनिधि पहलवान, हाथी, सेनापति या अफसरों को लड़ाकर हार-जीत का फैसला घोषित कर लिया जाता है। जिस दल का लड़ाका पसन्द आता है उसकी फौज की जीत और दूसरे की हार मान ली जाती है।

अपने शीर्षक 'बहुरूपिये जोगी के किस्से ही किस्से' में वह पुरूखू पन्त जो जोगी रूप युद्ध हारने पर था, उस जोगी ने नानी के आंगन में खड़े हो कर भीख नहीं भूख पुकारी लिखते हैं कटघर की लड़ाई में रूद्रचन्द का 'इकफा' मुगलों की विशाल सेना से हुआ था। यह लड़ाई नौ लाख रूपये लगाने प्रति वर्ष की तराई-भावर प्रान्त के लिए लड़े राजा रूद्रचन्द थे। दिलचस्प अंदाज में लिखी यह किताबें एक जादू की तरह आप को स्पर्श करेंगी, पढ़िये तो देखें क्या होता है! वैसे भी संजोया, साधा इतिहास 'हम क्या हैं' को समझने का आइना और आपके संघर्षरत बुजुर्गों का स्मरण होता है। रूचिकर पाठकों के लिए एक तोहफा है।

सीमान्त की सेहत के लिये जौलजीबी सबसे सटीक

उपजिला अस्पताल शिफ्ट करने की मांग उठी

जौलजीबी। पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय में मेडिकल कालेज बनने के बाद जिला अस्पताल को स्थानान्तरित करने की शासन स्तर पर चल रही कवायद के बीच ऐतिहासिक कस्बा जौलजीबी में जिला अस्पताल स्थानान्तरित करने की मांग जोर पकड़ चुकी है।

क्षेत्रवासियों और जनप्रतिनिधियों की ने एक बैठक कर जिला अस्पताल को जौलजीबी में सामुदायिक उपजिला चिकित्सालय के रूप में संचालित करने की मांग उठाई। बैठक में कहा गया कि जौलजीबी भारत-चीन एवं नेपाल सीमा से जुड़े क्षेत्र के लिये स्वास्थ्य सुविधाओं की दृष्टि से सबसे सटीक स्थान है। यह क्षेत्र करीब बीस ग्राम सभाओं का केन्द्र बिन्दु होने के साथ ही सैनिक बाहुल्य क्षेत्र है। इसके अलावा जौलजीबी में प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक मेला आयोजित होता है, जिसके कारण यहाँ बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की जरूरत और अधिक बढ़ जाती है। वक्ताओं ने कहा कि मुनस्यारी, धारचूला, डीडीहाट, कनालीछीना विकासखण्डों के अलावा नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों से आने वाले मरीजों के लिये जौलजीबी भौगोलिक रूप से उपयुक्त स्थान है। जौलजीबी के आसपास धारचूला, कनालीछीना और डीडीहाट क्षेत्र में पर्याप्त भूमि उपलब्ध कराने के लिये क्षेत्रवासी हरसम्भव सहयोग करने को तैयार हैं। क्षेत्रवासियों ने कहा कि चिकित्सालय के लिये भूमि हस्तान्तरण की कार्रवाई की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर स्थानीय लोग भूमि दान करने के लिये भी तैयार हैं। उनका कहना है कि अस्पताल को जौलजीबी में लाने से सीमान्त क्षेत्र के लोगो को उपचार के लिये दूर जिला मुख्यालय या अन्य मैदानी क्षेत्र में नहीं जाना पड़ेगा। भविष्य में टनकपुर जौलजीबी मोटर मार्ग शुरू होने तथा बांसबगड़-बंगापानी मोटर मार्ग बनने के बाद मूनाकोट, बेरीनाग सहित बागेश्वर जिले के कपकोट क्षेत्र की जनता को भी जौलजीबी में स्थापित होने वाले अस्पताल का लाभ मिल सकेगा। समाजसेवी शकुन्तला दताल ने कहा है कि वह इस अस्पताल को स्थापित कराने के लिये लगातार अभियान चलाएंगी।

दिसम्बर से शुरू होगी जनगणना

देहरादून। प्रदेश में सामान्य जनगणना 2027 की प्रक्रिया 1 दिसम्बर 2026 से शुरू होगी। इससे पहले 16 नवम्बर से 30 नवम्बर तक नागरिकों को स्व-गणना की सुविधा दी जाएगी। जनगणना के लिये 5 जनवरी 2027 की मध्यरात्रि 12 बजे को सन्दर्भ तिथि निधारित की गई है। इसी के आधार पर राज्य की आबादी से सम्बन्धित आंकड़े दर्ज किए जाएंगे।

बताया गया है कि मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन की अध्यक्षता में बैठक के बाद प्रशिक्षण कार्यक्रम और फिर एक दिसम्बर 2026 से 4 जनवरी 2027 तक जनसंख्या गणना का मुख्य कार्य चलेगा। इस अवधि में गणनाकर्मी घर-घर जाकर निर्धारित प्रक्रिया के तहत परिवारों और जनसंख्या से सम्बन्धित आवश्यक विवरण दर्ज करेंगे। स्व गणना के दौरान अपना विवरण दर्ज करने वाले नागरिकों के विवरण का भी निर्धारित प्रक्रिया के तहत सत्यापन किय जाएगा। जनगणना का कार्य पूरा होने के बाद 5 जनवरी 2027 तक पुनरीक्षण चरण चलेगा। इस दौरान गणना से छूटे लोगों अथवा दर्ज किए गए विवरण में आवश्यक सुधार की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। अधिकारियों की ओर से जनगणना की प्रक्रिया को निर्धारित समय सारिणी के अनुसार पूरा करने की तैयारी की जा चुकी है। बताया गया है कि प्रदेश में वर्तमान में हिमाच्छादित क्षेत्रों में जनगणना का कार्य चल रहा है। इन क्षेत्रों में जनगणना की प्रक्रिया एक अक्टूबर 2026 तक पूरी की जाएगी।

राइस मिलर्स नाराज

मांग पूरी नहीं हुई तो धान खरीद से हाथ खींच लेंगे

सितारगंज। धान खरीद सत्र शुरू होने से पहले ही राइस मिलर्स ने अपनी लम्बित मांगों को लेकर प्रशासन के समक्ष अपनी मांग रख दी है। राइस मिलर्स एसोसिएशन ने साफ शब्दों में कहा है कि यदि उनकी मांगों का समाधान नहीं हुआ तो आगामी धान खरीद सत्र 2026-27 में मिलर्स सरकार के साथ अनुबन्ध नहीं करेंगे।

एसोसिएशन के पदाधिकारी तहसील कार्यालय पहुँचे और तहसीलदार हिमांशु जोशी को ज्ञापन सौंपते हुए समस्याओं का शीघ्र निस्तारण करने की मांग की। इससे पहले एसोसिएशन की रुद्रपुर में हुई बैठ में प्रदेश भर के मिलर्स और नई कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने एक सुर से लम्बित भुगतान और सीएमआर उठान समेत विभिन्न समस्याओं पर चर्चा के बाद मांगें पूरी होने तक नए सत्र में सरकार अनुबन्ध नहीं करने का निर्णय लिया। ज्ञापन में कहा है कि वर्ष 2019 से 2026 तक करीब 500 करोड़ रुपये के बिल लम्बित हैं। इनका तत्काल भुगतान किया जाए। इसके साथ ही वर्ष 2025-26 का करीब सात लाख टन चावल (सीएम आर) गोदामों से जल्द उठाने की मांग की गई है। राइस मिलर्स ने वर्ष 2022-23 से 2025-26 तक जमा कराए गए 0.5 प्रतिशत मण्डी शुल्क की वापसी की मांग की है। साथ ही आगामी धान खरीद सत्र में मण्डी शुल्क का भुगतान विभाग द्वारा सीधे अपने खाते में किए जाने की मांग रखी है।

एसोसिएशन ने तहसीलदार से मांगों को शासन स्तर तक पहुँचाकर जल्द समाधान कराने का आग्रह किया। यह भी कहा कि समस्याओं का समाधान नहीं होने पर आगामी धान खरीद प्रक्रिया में उनका सहयोग प्रभावित हो सकता है। इस मौके पर एसोसिएशन के अध्यक्ष सौरभ सिंघल, दर्पण खुराना, विनय मित्तल, विनोद मित्तल, सुरेश अग्रवाल, पुनीत गोयल, अनिल सिंघल आदि थे।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav,
Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी
सम्पर्क- 8941807388
MILAM
BAKE HOUSE
CRAFTED IN THE MOUNTAINS
पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चुनाव तैयारी को लेकर कमर कस चुके नेता घर-घर घूमने लगे हैं

पहाड़ की सीटों पर टिकट के लिये तिकड़म लगाने लगे हैं

तराई की सीटों पर दबंगई का खेल चलने लगा है

गंगोलीहाट सीट पर कांग्रेस की ओर दांव और भाजपा में चाल

रामनगर सीट पर भाजपा और कांग्रेस के भीतर घमासान

हल्द्वानी सीट पर चौंकाने वाले नामों की खुसरफुसर

नैनीताल सीट पर दावेदारी के लिये लम्बी सूची

भीमताल सीट अन्दरखाने ध्रुव रौतेला की चर्चा

विधानसभा चुनाव के लिये लिये प्रशासनिक तैयारी अन्दरखाने जारी है लेकिन उससे ज्यादा कमर नेतागण कस चुके हैं। यहाँ तक कि कुछ ने तो अपना पार्टी टिकट पक्का मानकर प्रचार शुरू कर दिया है और घर-घर घूमने लगे हैं। बात पार्टी से टिकट मिलने की करें तो अभी तक भाजपा और कांग्रेस में कुछ सीटों पर तस्वीर साफ दिख रही है और अधिकांश पर जीतने का हिसाब लगाया जा रहा है उसी अनुसार टिकट वितरण होगा। ऐसे में पहाड़ की सीटों पर तिकड़म लगाई जा रही हैं जबकि तराई की सीटों के लिये दबंगई का चलने लगा है। लगता है कि पार्टियां भी ऐसे दबंग नेताओं पर भरोसा सा करने लगी हैं अन्यथा अनुशासन व तीखे बोल बोलने पर रोक होती। तराई की सभी सीटों पर आये दिन हंगामा देखकर चुनावों में इनकी सम्वेदनशीलता का अनुमान लगाया जाने लगा है।

गंगोलीहाट विधानसभा सीट पर खजान गुड्डू और मनोज कुमार द्वारा जनता के बीच लगातार हलचल की जा रही है ऐसे में पार्टी को इन दो प्रत्याशियों के दांव पर टिकट तय करना है जबकि भाजपा में टिकट के लिये लम्बी सूची है और सब अपनी ओर से चाल चल रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि विधायक फकीर राम टम्टा की जगह इस बार उन्हें टिकट मिला सकता है।

हल्द्वानी सीट पर चौंकाने वाले नामों की खुसरफुसर होने लगी है। कांग्रेसी विधायक सुमित तो दावेदार हैं ही भाजपा की ओर से कई दावेदारियां हैं। नैनीताल विधानसभा सीट पर भाजपा की वरिष्ठ नेता एवं पूर्व परिवहन व खाद्य मंत्री सुरेश चन्द्र आर्य तथा भाजपा की वरिष्ठ नेत्री व पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती बीना आर्य ने दावेदारी जताई है। इसके अलावा भी लम्बी सूची है। भीमताल सीट पर मंत्री रामसिंह कैड़ा ही बलवान दिखाई दे रहे हैं लेकिन बन रही स्थितियों में कुछ भी सम्भव है। दर्जा मंत्री ध्रुव रौतेला की चर्चा सुनाई दे रही है। टिकट की दौड़ में मोहन पाल सहित कई नाम पहले से भी हैं। कांग्रेस की ओर से लाखन सिंह और हरीश पनेरू की जोरदार दावेदारी चल रही है। इस बीच यूकेडी की उठापटक का गुनगुना असर भी है क्योंकि इस क्षेत्रीय दल पर इस बार दारोमदार है लेकिन उलझन भी कम नहीं।

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats **APNA GHAR** चौकोड़ी
मो. 9458920379, 6396098804
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)